P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* (Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय राजनैतिक में साम्प्रदायिकता और धर्म

पवन कुमार
रिचर्स स्कॉलर
पी. डी. एफ.,
आई. सी. एस. एस. आर. एस.
डी. पी. जी. कॉलेज,
गाजियाबाद, यू.पी., भारत

सारांश

यह सत्य है कि राजनीति देश पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरीकों से देश पर अपना प्रभाव डालती है। यह सच है कि भारत जैसे देश में जिसमें सभी धर्मो के लोग निवास करते है और यहाँ धर्म निरपेक्षता और राजनीति दोनों आपस में कहीं न कहीं और किसी न किसी रूप मे जुड़े हुए है। भारत जैसे बहुधर्मी देश में यदि साफ–सुथरी राजनीति का प्रचलन होगा और सभी राजनीतिक दल राष्ट्रीय मुद्दों को वफादारी और कर्तव्यनिष्ठा से उठायेंगे तो भारत में धर्म निरपेक्षता का भविष्य साफ तौर पर अच्छा होगा। यदि कोई भी राजनैतिक दल ईर्ष्या द्वेष और जातिगत राजनीति करते रहेंगे तो उनका वोट प्रतिशत तो सुनिश्चित हो सकता है परन्तु धर्म निरपेक्षता और हमारे देश का भविष्य नष्ट हो जायेगा। साम्प्रदायिकता से हमारा अभिप्राय है कि किसी धर्म को सत्ता द्वारा विशेष उनके हितों द्वारा बल दिया जाए। और उनके हित राष्ट्रीय हित में ऊपर होकर प्राथमिकता पर रखे जाए। इस प्रकार देश हित में हमें अपने छोटे–छोटे स्वार्थ को त्यागना होगा और देश मे भाईचारा सद्भावना, प्रेम को बढ़ाना होगा।

मुख्य शब्द : राष्ट्र, धर्मनिरपेक्ष, साम्प्रायिकता, राजनीति।

प्रस्तावना

आज हमारे देश के सामने साम्प्रदायिकता जैसी भयंकर बीमारी मुँह बाये खड़ी है। साम्प्रदायिकता हमारे राष्ट्र के विकास एवं एकीकरण के सामने एक विशाल चुनौती बनकर उभरी हैं। साम्प्रदायिकता और जातिवाद, क्षेत्रवाद जैसी समस्याए कब कैसे और क्यों आयी अतः इन समस्याओं का निराकरण कर अपने संविधान और राष्ट्र को मजबूत बनाना होगा। आजादी के समय जब हमारे संविधान का निर्माण हो रहा था तब भी यही समस्या थी। इसी समस्या के निराकरण के लिए हमारे संविधान में भारत देश एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया है। भारत में धर्म निरपेक्षवाद का भविष्य कैसा होगा। यह तो कोई नही जानता। परन्तु यह शब्द विवादास्पद है। परन्तु मैं आजादी के बाद चली आ रही स्वार्थपरक राजनीति धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण मे बड़ी बाधा है। कोई कहता है कि धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण मे धर्म बड़ी बाधा है अब यह विचारणीय प्रश्न है कि धर्म कोई भी हो कोई गलत नहीं होता। परन्तु धर्म के नाम पर राजनीति करना गलत होता है। वर्तमान समय में यह सब देखने को मिलता है। लोकसभा 2019 के चुनाव में राजनीति का ध्रवीकरण करने की पूरी कोशिश की गई। जो राजनीति पर एक प्रश्न/या काला धब्बा है। लोगों को धर्म के नाम पर बाँटा जा रहा है। जब देश आजाद हुआ उसी समय संविधान के निर्माताओं ने इन सब बातों को सोचकर ही सभी देशों से हर संविधान की अच्छी बाते लेकर हमारे संविधान का निर्माण किया हमारा संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। संविधान ने हमारे देश को धर्म निरेपक्ष राज्य कहा है। जहाँ सभी धर्मों का आदर होता है। अपने धर्म या सम्प्रदाय में अटूट आस्था रखना। सम्प्रदायिकता का अर्थ है धर्म के नाम पर हिंसा, दंगे, लोगों की भावनाओं को ठेस पहुँचाना। साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता के बजाय देश को विकास के पथ पर आगे बढ़ने से रोकती है। वास्तव में भारत में साम्प्रदायिकता का उदय मुस्लिम काल से शुरू हुआ। लोगों को धर्म–जाति के नाम पर आपस मे लड़ाया जाने लगा। देश में साम्प्रदायिक घटनायें शुरू होने लगी। यह अतीत से लेकर वर्तमान समय तक की एक विकट समस्या बनी हुई है। सभी धर्मों के लोगो ने हिन्दू, बौद्ध, जैनियों, पारसियों, इसाईयों और मुसलमानों के अपने–अपने संगठन है। ये सभी संगठन अपने अपने धर्म के लोगो के हितों की पूर्ति के लिए प्रयासरत है। यहाँ तक तो कोई दिक्कत नही होती परन्तु जब कोई संगठन राष्ट्रीय हितों से ऊपर उठकर अपने धर्म की बात को रखता है ये साम्प्रदायिकता की श्रेणी में आता है। आजकल कई संगठन इसी श्रेणी में आते हैं मुस्लिम लीग, हिन्दु महासभा। ये शासन पर दबाव बनाकर अपने व्यक्ति को सत्ता, प्रतिष्ठ और राजनैतिक

अधिकार प्रदान करते है। धर्म के हिसाब से भारत देश विशेष रूप से अनिश्चितता का दौर था। मुस्लिम आगमन के बाद अक्सर धर्म के नाम पर दोनों राजा लड़ते थे। परन्तु उस समय तक साम्प्रदायिकता ने अपने इतने गहरे पाँव नही पसारे थें। अंग्रेजों के भारत आगमन के समय देश की बागडोर मुसलमानों के हाथों में थी और अंग्रेज व्यापार करने के उद्देश्य से भारत आये दोनो में हितों के कारण टकराव होने आवश्यक थें अतः अंग्रेजों और मुसलमानों में टकराव हुआ और अंग्रेजों ने चतुराई से हिन्दुओं को ढाल बनाना शुरू कर दिया। अंग्रेजों ने भारत में साम्प्रदायिकता का पौधा तैयार कर दिया। हिन्दुओं और मुसलमानो में फूट डालों राज करो की नीति अग्रेजों ने अपनाई दोनो धर्मो के लोगों को आपस मे लड़ाते रहे और भारत में अपनी हुकूमत चलाते रहें। अंग्रेजों और मुसलमानों का प्रथम युद्ध प्लासी का युद्ध के बाद जब कम्पनी के हाथ में शासन सत्ता आ गई तो अग्रेजों ने मुसलमानों के प्रति सौतेला ओर अशोभनीय व्यवहार किया। हिन्दुओं को नौकरियों में प्रोत्साहन देकर उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति अच्छी हुई और मुसलमानो की स्थिति दिन प्रतिदिन दयनीय होने लगी तो मुस्लिम समाज के कुछ लोगो ने बहावी आन्दोलन के रूप में मुस्लिमों ने अपना असन्तोष व्यक्त कियां अतः कम्पनी के कर्मचारियों ने मुसलमानों के प्रति दमनकारी और षडयंत्रकारी नीति अपनायी। अग्रेजों की इस नीति के कारण समाज में भेदभाव बढ़ता चला गया हिन्दुओं की स्थिति मुसलमानों से बेहतर हो गयीं जब अग्रेंजी को भी लगने लगा कि अब हिन्दू उनके लिए खतरा पैदा कर सकते है तो अग्रेजों ने मुसलमानों से चतुराई पूर्ण नीति अपनाई। 1875 में अग्रेजों ने मुसलमानों से मिलकर मोम्मडन एग्लों ओरियन्टल कॉलेज और ओरियन्टल डिफेंस एसोसिएशन की स्थापना की। फूट डालो राज करो की नीति का अनुसरण करते हुए बंगाल का विभाजन कर दिया और अग्रेज अपने मकसद मे कामयाब हुए। हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लडवाते रहे और देश पर शासन करते रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत को संविधान द्वारा धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया। स्वतंत्रता के बाद से लेकर वर्तमान समय तक भारत मे एक समस्या साम्प्रदायिकता ओर जातिवाद आज भी अपने पैर जमाते हुए है। विभिन्न धर्म एवं जाति के लोग अपने स्वार्थ के आधार पर अपने धर्म एवं जाति के लोगो को राजनीतिक सपोर्ट करते हैं। भारत में साम्प्रदायिकता की भावना बढती रही। मुस्लिम नागरिकों में पृथकता की भावना बढ़ती गई। वे अपने आपको मुख्य धारा मे सम्मलित नही कर पाये। समय समय पर मुस्लिम धर्म गुरूओं और नेताओं ने इस बात पर जोर दिया कि वे राष्ट्रीय एकता सद्भावना व राजनैतिक दलों का सहयोग करेगें। परन्तु वास्तविकता मे ऐसा हो नही पाया। क्योंकि हिन्दू महासभा और आर0एस0एस0 जैसे दल मुस्लिम विरोधी है वे धर्म और राष्ट्रीयता के मुद्दे पर मुस्लिम विरोधी बयानबाजी करते हैं जिससे साम्प्रदायिकता बढ़ती है। हमारे देश हिन्दू–मुस्लिमों के छोटे–छोटे झगड़े होते रहते है। जिसे बढ़ाचढ़ाकर पेश किया जाता है और कट्टरवादी धार्मिकदल उन्हें साम्प्रदायिकता का रूप देते हे। और उसमे घी डालने का काम हमारा पड़ौसी देश पाकिस्तान अपने चैनलों / मीडिया से कर देता है। देश में साम्प्रदायिकता की वृद्धि होती जा रही है। इसका एक बडा कारण अशिक्षा, बेरोजगारी, आर्थिक पिछड़ापन, साधारणतः मुसलमान शिक्षा, रोजगारी और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। जिसमें उसके मन में हीन भावना प्रबल होती है। साम्प्रदायिक दंगो के कारण न केवल राजनैतिक, आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक भाईचारे को अत्यधिक नुकसान होता है। सन् 2013 में मु0नगर साम्प्रदायिक दंगा एक उदाहरण है। इससे न केवल सामाजिक बल्कि राष्ट्रीय सम्पत्ति को भी अत्यधिक नुकसान हुआ। लोग घरों से बेघर हुए साथ ही साथ मानवता भी शर्मशार हुई जो भूखे, प्यासे के साथ ही साथ अपना जीवन खाना बदोस की तरह काटा। इस तरह के झगड़ों के कारण आपस मे द्वेष बना रहता है। जिस गाँव, नगर या शहर मे जिस आबादी के ज्यादा लोग होते है वे अल्प मतों वालो का शोषण और उन्हें परेशान करते रहते है। ये झगड़े इनसे बड़े होकर आजकल गाय और मॉस इत्यादि का सहारा लेकर हिदूवादी सोच के व्यक्ति मुसलमानों पर जबरदस्ती मारपीट करते है यहाँ तक कि कभी कभी जान से भी मार देते है। जिससे समाज में भय का माहौल है। कभी कभी मन्दिर–मस्जिद और आजकल तो वन्दे मातरम, जय श्री राम का भी नारा जबरदस्ती से बुलवाते है। अगर नही बोलते तो उन्हें पीटते है। भारत में अनेक धर्मों के लोग निवास करते है। देश के अन्दर जो साम्प्रदायिक, झगड़े तनाव पैदा होते है और अपने स्वार्थ के लिए सरकार का विरोध करना, इन सब बातो के कारण देश को आर्थिक रूप से कमजोरी का सामना करना पड़ता है ओर राष्ट्रीय सुरक्षा का खतरा पैदा हो जाता है। साम्प्रदायिक दगों पर काबू पाने के लिए अत्यधिक धन व्यय करना पड़ता है। औद्योगिक विकास मे बाधा पड़ती है। अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। इन्हीं सब बातों के कारण देश विकासशील से विकसित दशा की और न जा सका। आज हमारे देश में जब भी कोई चुनाव आते है तो राजनैतिक दल अपने फायदे के लिए या वोट प्राप्त करने के लिए धार्मिक उन्माद या धर्मो या सम्प्रदायों का सहारा लेते है। यहाँ तक कि कुछ मुसलमानों के धार्मिक गुरूओं के दरबार मे अपनी दस्तक देते है तो कुछ मन्दिरों और पीठ के आचार्यों के दरबार में, कोई गुरूद्वारा में मत्था टेकने के लिए जाते है। कोई भी राजनैतिक दल इन बातों से ऊपर नहीं उठता। सरकार में बने रहने के लिए नेता राज्यों का विभाजन भी धार्मिक आधार पर या अपने राजनैतिक फायदे के लिए करते है। और हमारे देश का विभाजन भी धार्मिक आधार पर ही हुआ था। सरकार में मन्त्रिमण्डल का निर्माण करते समय भी जाति और धर्म का ध्यान रखा जाता है। आधुनिकता के इस युग में धर्म और साम्प्रदायिकता का त्याग कर हर व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा, रोजगार इत्यादि की बात करनी चाहिए। जिससे देश विकसित होगा छोटी मानसिकता वाले लोगों को राजनैतिकता से दूर करना होगा। सभी को भाईचारा, सद्भावना बना कर देश का विकास करना होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत विभिन्न धर्म एवं संस्कृतिवाला देश है। यहाँ विभिन्न जातियाँ निवास करती है। जिनके रीति रिवाज पूर्णत भिन्न है। जिसके कारण उनके टकराव होते रहते हैं। इन्ही विभिन्नताओं का फायदा उठाकर विभिन्न राजनैतिक दल अपने हितों की पूर्ति कर रहे है। जिससे दंगे, हिंसा, आतकवांद, उग्रवाद जैसी, घटनाओं को बढ़ावा मिलता है और राष्ट्रीय एकता में बाधा उत्पन्न होती है। भारतीय समाज का आज भी बहुत बड़ा भाग अशिक्षित है। और यदि शिक्षित है भी तो भी वह जातिवाद क्षेत्रवाद, धर्मवाद आदि मुद्दों से ऊपर नहीं उठ पाये है। अध्ययन का मूल उद्देश्य इन विघटन भारी प्रवृत्तियों की पहचान कर उनका निराकरण करना है जिससे एक शक्तिशाली देश का निर्माण हो सके।

निष्कर्ष

भारतीय संविधान में भारत को एक पंथनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया है। जिसका अर्थ है कभी धर्मो को समान अधिकार है परन्तु फिर भी कुछ राजनैतिक दल जनता भी अशिक्षा, जातिवाद व धर्म का फायदा उठाकर अपने हितों की पूर्ति करते है जो राष्ट्र के लिए हानिकारक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सारस्वत आनन्द प्रकाश , 1989, साम्प्रदायिकता एवं समाजशास्त्र पद्धति, साम्प्रदायिकता एवं भारतीय समाज, सम्पादक डॉ. आनन्द प्रकाश सारस्वत, गहलौत प्रिटिंग प्रेस , हापुड।

सिंह, कंचन, 1989, साम्प्रदायिकता एवं समाज, सम्पादित, डॉ. आनन्द प्रकाश सारस्वत गहलौत प्रिटिंग प्रेस , हापुड।

शर्मा राजेन्द्र कुमार, 1989 साम्प्रदायिकता के प्रसार में पत्रकारिता का कार्य भाग, साम्प्रदायिकता एवं भारतीय समाज, सम्पादक डॉ. आनन्द प्रकाश सारस्वत, गहलौत प्रिटिंग प्रेस , हापुड।

यादव आर. एस., 1989, आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता एवं भारतीय समाज, सम्पादक डॉ. आनन्द प्रकाश सारस्वत, गहलौत प्रिटिंग प्रेस , हापुड।

अहमद इम्तियाज (सं0) भारत के मुसलमानों में जाति व्यवस्था और समाजिक स्तरीकरण (अनु0 – नरेश नदीम), 2003, ग्रन्थ शिल्पी , दिल्ली।

आंबेडकर डा. भीमराव भारत का विभाजन 2005, मध्य प्रदेश हिन्दी अकादमी, भोपाल।

इंजीनियर, असगर अली, भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव (अनुवाद सुभाष चन्द्र) , 2007, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद।

कुमार रविन्दर आधुनिक सं.0 आधुनिक भारत का आधुनिक इतिहास, 2005 ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली।

ग्रोवर बी. एल. यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, 1995 एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी लि0 नई दिल्ली।

चंद्र बिपिन सं.0 आधुनिक भारत , 2009, अनामिका पब्लिशर्स , नई दिल्ली।

चंद्र सुभाष साम्प्रदायिकता, 2006 इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद।

चंद्र बिपिन साम्प्रदायिकता, एक परिचय (अनुवाद– आलोक तोमर), 2004 अनामिका पब्लिशर्स , नई दिल्ली।

चंद्र बिपिन आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता, 1997 हिन्दी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय दिल्ली विश्वविधालय दिल्ली।

चंद्र बिपिन भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, 1998, हिन्दी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय दिल्ली विश्वविधालय दिल्ली।

चंद्र बिपिन आधुनिक भारत (अनुवाद– श्यामबिहारी राय) 1993 एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली।

देसाई ए. आर. भारतीय राष्ट्रवाद की समाजिक प्रष्ठभूमि , 2002, मैकलीन प्रकाशन, दिल्ली।

मार्क्स , कार्ल, भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (अनुवाद– रमेश सिन्हा), 2012 पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।

मिश्र सलिल , साम्प्रदायिक राजनीति का आख्यान (अनुवाद– सत्यकाम), 2009 ग्रन्थ शिल्पी , दिल्ली।

श्रीनिवास एम. एन. (स.) आधुनिक भारत में जाति ,2012 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

सरकार, सुमित, आधुनिक भारत (अनुवाद– सुशीला डोभाल), 2010 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

सिन्हा, सच्चिदानंद, श्ाारतीय राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता, 1990, मराल प्रकाशन मुजफ्फरपुर।

हसन, मुशीररूल, भारत में राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिक राजनीति (अनुवाद– गोपाल प्रधान), 2008 ग्रन्थ शिल्पी , दिल्ली।